पूजन की तैयारी व सामग्री

पूजा हेतु श्री महावीर स्वामी, गौतम स्वामी, सरस्वती, लक्ष्मी आदि की तस्वीरें, चाँदी के सिक्के (रूपानाणां)।

बाजोट-1, कलश-2, दीपक बड़ा-1, छोटा दीपक-1, धूपिया-1, कटोरी-2, मिट्टी के दिये, पंचामृत के लिए कटोरा।

बहीखाते(आवश्यकतानुसार), कलमें, दवात आदि।

श्रीफल, अक्षत, कुकुं, शुद्धजल, केसर-चंदन, पुष्प, नासक्षेप, धूप, कपास, घी, मिठाईयाँ, फल, अखण्ड पान, लौंग, इलायची, मौली, कपूर, पंचामृत (दूध, दही, घी, शक्कर, केसर), लाल वस्त्र।

पूजन करने वालों को स्नान करके शुद्ध वस्त्र पहनने चाहिए।

शुभ पुट्टों में तस्वीरें, नई बहियाँ, दस्तरी, कलमें (पेन), दवात आदि साफ किए हुए वाजोट पर पूर्व या उत्तर दिशा में स्थापन करना चाहिए।

इस पार्ट के दाहिनी ओर घृत का दीपक बांई ओर धूप या अगरबत्ती रखनी चाहिए।

दीमावली पर्व पर उपवास, आयश्विल, एकासना आदि श्राविनुसार तप करना चाहिए।

फटाके, अतिशबाजी, आदि का उपयोग न करें। इनसे क्षणिक आनन्द भले ही प्राप्त हो किन्तु अत्यधिक कर्म वंध होता हे। यह सर्वथा त्याग है।

पूजन-विधि

णमो अरिहंताणं,
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्व-साहूणं,
एसो पंच नमुक्कारो,
सव्व पावण्णासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवई मंगलम् ।।

मौली बांधे । इसके बाद नवकार गिनते हुए कलश में मौली बांधकर, शुद्ध जल भरकर, नारियल में मौली बांधकर कलश सहित स्वारितक पर स्थापन करें, और नवकार गिनते हुए ही कलम, दवात आदि में मौली बांधे । कुमारिका सर्वे पूजकों के कपाल पर कुंकुंप तिलक और उस अक्षत लगावें । रखें । नई बही के प्रथम पन्ने पर कुंकुं या चंदन से बड़ा स्वास्तिक बनाकर निम्नानुसार लिखें –

॥ ॐ अर्हम् नमः ॥

श्री

श्री श्री

श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री



स्वस्तिक के ऊपर पान का पत्ता सोपारी, लौंग, इलायची और चांदी का सिक्का रखिये

श्री परमात्मा ने नमः।

श्री पार्श्वनाथायः नमः ।

श्री महावीराय नमः ।

श्री सद्गुरूभ्योः नमः।

श्री सरस्वत्यै नमः।

श्री लक्ष्मी देव्यै नमः।

श्री गौतम स्वामीजी जैसी लब्धि हो।

श्री केशरियाजी जैसा भंडार भरपूर हो।

श्री भरत चक्रवर्तीजी जैसी ऋद्धि हो।

श्री बाहुबली जी जैसा बल प्राप्त हो।

श्री अभयकुमारजी जैसी बुद्धि हो।

श्री कवयन्नाजी सेठ जैसा सौभाग्य हो।

श्री धन्ना-शालिभद्रजी जैसी ऋद्धि हो।

श्री श्रेयांसकुमार जी जैसी दान वृत्ति हो ।

श्री रत्नाकर सागर की लहर हो।

श्री जिनशासन की प्रभाव न हो।

श्री वीर संवत् 25..... विक्रम संवत् 20..... शुभ मिति कार्तिक बदी..... वार..... तद्नुसार दिनांक..... महिना..... सन् 20..... ईस्वी मुहूर्त.....

इसके बाद उपरोक्त स्वस्तिक पर एक नागरबेल का अखंड पान रखें, उस पर सुपारी, इलायची, लौंग, रख कर बही आदि के चारों ओर फिरती शुद्ध जलधारा देकर वासक्षेप अक्षत (चांवल) और पृष्प (फूल) मिश्रित कुसुमांजलि हाथ में लेकर नीचे लिखित श्लोक व मंत्र बोल कुसुमांजलि करना |

श्लोक

मंगलम् भगवान वीरो, मंगलम् गौतम प्रभु |

मंगलम् स्थूलभद्राद्या, जैनो धर्मोऽस्तु मंगलम् ॥

मंत्र : ॐ आर्यावर्ते असिमन् जम्बुद्वीपे दश्मिणाद्धें भरतक्षेत्रे मध्य-खण्डे भारत देशे ..... राज्ये ..... नगरे मम गृहे श्री शारदा देवी, लक्ष्मी देवी, आगच्छ – आगच्छ तिष्ठ – तिष्ठ स्वाहाः ।।

नोट : कुसुमांजलि करने के बाद हाथ जोड़कर एकाग्रचित्त से निम्नलिखित स्तुति बोलना चाहिये ।

स्तुति :

स्वः श्रियम् श्रीमद्गर्हत्तः, सिद्धाः सिद्धि पुरीपदम् ।
आचार्याः पंचाचार, वाचकां वाचनां वराम् ।।1।।
साधवः सिद्धि साहाय्यं, वितन्वतु विवेकिनाम् ।
मंगलानां च सर्वेषां, आद्यं भवति मंगलम् ।।2।।
अहंमित्यक्षरं माया, बीजं च प्रणवाक्षरम् ।
एवं नाना स्वरूपं च, ध्येयं ध्यायन्ति योगिनः ।।3।।
हृत्यच्चषोडश दल, स्थापितं षोडशाक्षरम् ।
परमेष्ठि स्तुतेर्बीज, ध्यायेदक्षरदं मुदा ।।4।।
मंत्राणामादिमं मंत्रं, तन्त्रं विध्नोघ निग्रहे ।
ये स्मरन्ति सदैवेनं, ते भवन्ति जिनप्रभाः ।।5।।

नोटः इस स्तुति बोलने के बाद नीचे लिखा हुआ मंत्र बोलते हुए आठों द्रव्यों (जल, चंदन, केशर, पुष्प, धूप, दीप, अक्षत, नैवेद्य और फल) से क्रमशः आठ बार शारदा देवी व लक्ष्मी देवी का पूजन करें ।

● ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै, केवलज्ञान स्वरूपायै, लोकालोक प्रकाशीय, सरस्वत्यै, लक्ष्मीदेव्यै जलं समरपयामि स्वाहा ।।

● ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै, केवलज्ञान स्वरूपायै, लोकालोक प्रकाशीय, सरस्वत्यै, लक्ष्मीदेव्यै चंदनं समरपयामि स्वाहा ।।

● ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै, केवलज्ञान स्वरूपायै, लोकालोक प्रकाशीय, सरस्वत्यै, लक्ष्मीदेव्यै पुष्पं समरपयामि स्वाहा ।।

● ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै, केवलज्ञान स्वरूपायै, लोकालोक प्रकाशीय, सरस्वत्यै, लक्ष्मीदेव्यै धूपं समरपयामि स्वाहा ।।

● ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै, केवलज्ञान स्वरूपायै, लोकालोक प्रकाशीय, सरस्वत्यै, लक्ष्मीदेव्यै दीपं समरपयामि स्वाहा ।।

● ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै, केवलज्ञान स्वरूपायै, लोकालोक प्रकाशीय, सरस्वत्यै, लक्ष्मीदेव्यै अक्षतं समरपयामि स्वाहा ।।

● ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै, केवलज्ञान स्वरूपायै, लोकालोक प्रकाशीय, सरस्वत्यै, लक्ष्मीदेव्यै नैवेद्यं समरपयामि स्वाहा ।।

● ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै, केवलज्ञान स्वरूपायै, लोकालोक प्रकाशीय, सरस्वत्यै, लक्ष्मीदेव्यै फलं समरपयामि स्वाहा ।।

इसके पश्चात् जितने भी पूजक उपस्थित हों सब खड़े होकर हाथ जोड़कर सरस्वती एवं लक्ष्मी जी का पाठ करें

अनुभूत सिद्ध सारस्वत स्तव

सकल लोक सुसेवितपत्कजा, वर यशोर्जित शारदा कौमुदी।
निखिल कल्मष नारान तत्परा, जयतु सा जगतां जननी सदा ।।1।।
कमल गर्भ विराजित मूघना, मणिकिरीट सुशोभित मस्तका ।
कनक कुंडल भूषित कर्णिका, जयतु सा जगतां जननी सदा ।।2।।
बसु हरिद्गज संस्नपितेश्वरी, विधृत सोमकला जगदीश्वरी ।
जलज पत्र समान विलोचना, जयतु सा जगतां जननी सदा ।।3।।
निजसुधैर्य जिताभर-भूधरा, निहित पुष्कर वृंदल सत्करा ।
सुदितार्क सहक्तनु बल्लिका, जयतु सा जगतां जननी सदा ।।4।।
विविध वांछित कामदुधाद्भुता, विशद पद्म हृदान्तर वासिनी ।
सुमतिसागर वर्धन चन्द्रिमा, जयतु सा जगतां जननी सदा ।।5।।

(द्रुतविलम्बितवृत्तम्)

कमलराल विहङ्गमवाहना, सितदुकूल विभूषण भूषिता ।
प्रणतभूमिरुहामृत-सारिणी, प्रवरदेहविभावरधारिणी ।।1।।
अमृतपूर्ण कमण्डलुधारिणी त्रिदशदानव मानव सेविता ।
भगवती परमैव सरस्वती, मम पुनातु सदा नयनाम्बुजं ।।2।।
जिनपति प्रथिता खिलवाङ्गमयी, गणधराननमण्डपनर्तकी ।
गुरुमुखाम्बुजखेलनहंसिका, विजयते जगति श्रुत देवता ।।3।।

अमृतदीधितिबिम्बसमाननां, त्रिजगती जननिर्मित माननाम् ।
नव-रसामृतवीचिसरस्वती, प्रमुदितः प्रणमामि सरस्वतीम् ।।4।।
विततत केतक पत्रविलोचने, विहितसंसृतिदुष्कृतमोचने ।
धवलपक्षविहङ्गमलांछिते, जय सरस्वती, पूरितवांछिते ।।5।।
भवदनुग्रहलेश तरंगिताः, तदुचितं प्रवदन्ति विपश्चितः ।
नृपसभासु यतः कमलाबला, कुचकला ललनानि वितन्वते ।।6।।
गतघना अपि हि त्वदनुग्रहात्, कलित कोमलवाक्यसुधोर्मयः।
चकितबालकुरंगविलोचना, जनमनांसि हरन्तितरां नरः।।7।।
करसरोरुहखेलनचंचला, तवविभाति वराजपमालिका।
श्रुतपयोनिधिमध्यविकस्वरो, ज्वलतरंगकलाग्रह साग्रहा।।8।।
द्विरद केसरि मारिभुजंगमा, सहनतस्कररराजरुजांभयम्।
तव गुणावलिगानतरंगिणां, न भविनां भवति श्रुतदेवते।।9।।

(स्त्रग्धरावृत्तम्)

ॐ ह्रीं क्लीं ब्लूं ततः श्रीं तदनुहसकलं ह्रीं अथो ऐं नमोऽन्ते।
लक्षं साक्षाज्जपेद् यः किलशुभ विधिना सत्तषा ब्रह्मचारी।।
निर्यान्तीं चन्द्रबिम्बात् कलयति मनसा त्वां चंद्रिकाभाम्।
सोऽत्यर्थं वह्निकुण्डे विहितघृतहुतिः स्याद्दशांसेन विद्वान ।। 10।।

(शार्दूलविक्रीडितवृत्तम्)

रें रे लक्षण-काव्य-नाटक-कथा चम्पू समालोकने।
क्वायासं वितनोषि बालिश! सुधा किं नम्रवक्त्राम्बुजः।।
भक्त्याऽराधय मंत्रराजसहसा तेनाऽनिशं भारतीं।
येन त्वं कविता-वितान-सविताऽद्वैत-प्रबुद्धायसे।। 11 ।।
चंच्चन्द्रमुखी प्रसिद्ध महिमा स्वच्छन्द्यराज्यप्रदाऽ।
नायासेन सुरासुरेश्वरगणैरभ्यर्चिता भावतः ।।
देवी संस्तुतवैभवा मलयजा लेपांग-रागद्युतिः।
सा मां पातु सरस्वती भगवती त्रलोक्य संजीवनी।। 12।।

(द्रुतविलम्बितवृत्तम्)

स्तवनमेतदनेकगुणान्वितं, पठति यो भविकः प्रमुदाः प्रगे।
स सहसामधुरैर्वचनामृतै, र्नृपगणानपि रंजयति स्फुटम्।। 13।।

श्री लक्ष्मी स्तोत्र

नमोऽस्तुते महालक्ष्मी, महासौख्यप्रदायिनी।
सर्वदा देहि मे द्रव्यं, दानाय मुक्ति हेतवे।। 1।।
धनं धान्यं धरां हर्ष, कीर्तिमायुर्यशः श्रियम्।
तुरंगान दंतिनः पुत्रान्, महालक्ष्मी प्रयच्छ मे।। 2।।
यन्मया वांछितम् देवी, सत्सर्व सफलं कुरु।
न बाध्यतां कुकर्माणि, संकटान्मे निवारय ।। 3।।

ध्यान

सुन्दर आरोग्य निवास करे दृढ़ तन में।
आशा उत्साह उमंग भरे शुचि मन में ।। 1।।
हो अनुचित योग-प्रयोग न धन साधन में।
उत्कृष्ट उच्चा आदर्श जले जीवन में ।। 2।।
तम मिटे ज्ञान की ज्योति जगत में छाए।
प्रभु! दिव्य दीवाली भव्य भाव भर जाए ।। 3।।

नोट: उपरोक्त स्तोत्र बोलने के बाद एक रकाबी (थामी) में दीपक और कूपर जाग्रत कर आरती करनी चाहिए।

आरती

सकल जिनन्द नाम करी, जिनवाणी, मन लाय।
सरस्वती लक्ष्मी करुं आरती, आतम गुरु पसाय ।। 1।।
ज्ञान जगत में सार है, ज्ञान परम हितकार।
ज्ञान सूर्य से होत है, दुरित तिमिर अपहार ।।2।।
श्री सरस्वती प्रभाव से, लहे जगत सम्मान।
ज्ञान बिना पशु सारिखा, पावे अति अपमान ।।3।।
श्रद्धा मूल क्रिया कही, ज्ञान मूल है तास।
पावे शिव सुख आत्मा, इससे अविचल वास।।4।।
अष्टमपद विंशति पदे, सप्तम नवपद ज्ञान।
तीर्थंकर पदवी लहे, आराधक भगवान ।।5।।

आरती के पश्चात निम्नलिखित पाठ पढ़े -

श्री गौतम स्वामी का अष्टम्

अंगूठे अमृते बसे, लब्धि तणा भंडार।
ते गुरु गौतम समरिये, वांछित फल दातार।।1।।
प्रभु वचने त्रिपदी लहि, सूत्र रचे तेणीवार।
चउदह पूरब मां रचे, लोकालोक विचार।।2।।
भगवति सूत्रे नमी, बंभी लिपि जयकार!
लोक लोकोत्तर सुख भणी, भाखी लिपि अढ़ार।।3।।
वीर प्रभु सुखिया थया, दीवाली दिन सार।
अन्तर महूरत तत्क्षणे, सुखिया सहू संसार ।।4।।
केवल ज्ञान लहे सदा, श्री गौतम गणधार!
सुरनर पर्षदा आगले, पट अभिषेक उदार ।।5।।
सुरनर पर्षदा आगले, भांखे श्री श्रुतवाण।
नाण थकी जग जाणिए, द्रव्यादिक चौठाण।।6।।
ते श्रुतज्ञान ने पूजिये, दीप धूप मनोहार।
वीर आगम अविचल रहो, वर्ष एकवीस हजार।।7।।
गुरु गौतम अष्टम कही, आणी हर्ष उल्लास।
भाव धरी जे समरसे, पूरे सरस्वती आश ।।8।।

उपरोक्त गौतम अष्टक बोलने के बाद में धूप दीप करके एकाग्र चित्त से निम्नलिखित सरस्वती मंत्र की एक,तीन अथवा पांच मालाएं जैसा हो गुणना चाहिए।

सरस्वती मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लीं श्रीं हसकलं ह्रीं ऐं नमः।

इस मंत्र का जाप करने के बाद पूजन में अज्ञानवशात् कोइ दोष लगा हो उसके लिए निम्नलिखित श्लोक पढ़ते हुए देवी से क्षमा याचना करनी चाहिए –

क्षमायाचना

ॐ आज्ञाहीनं क्रियाहीनं, मंत्रहीनं च यत्कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि, प्रसीद परमेश्वरी! ।।1।।
आव्हानं नैव जानामि, न जानामि विसर्जनम्।
पूजाऽर्चां नैव जानामि, क्षमस्व परमेश्वरी! ।।2।।
अपराधसहस्त्राणि. क्रियन्ते नित्याशी मया।
तत्सर्व क्षम्यतां देवि, प्रसीद परमेश्वरी ।।3।।

दीपावली का जाप

(1) ॐ ह्रीं श्री महावीर स्वामी सर्वज्ञाय नमः।

इस जाप की बीस माला मध्य रात के समय धूप दीप करके फेरना चाहिए।

(2) ॐ ह्रीं श्रीं महावीर स्वामी पारंगताय नमः।

इसकी बीस माला रात के 4.00 बजे के पहले-पहले पूरी कर लेनी चाहिए।

(3) ॐ ह्रीं श्री गौतम स्वामी केवलज्ञानाय नमः।

इसकी बीस माला सूर्योदय से पहले फेरना चाहिए। तत्पश्चात् मंदिर में दर्शन चैत्यवंदन एवं लड्डू चढ़ाने आदि की विधि पूरी करें। इसके बात गुरु महाराज को वंदन करे तथा उनके मुखार बिन्दु से श्री गौतम स्वामी का रास एकाग्रता पूर्वक श्रवण करना चाहिए।

।। इति ।।